किताबघर

निर्गुण कवियों की वाणियों का संचयन

रतीन्द्र मिश्र

दो दिन बाद हिंदी दिवस है। इस अवसर पर हिंदी भाषा को उसकी पूर्वज स्मृतियों में जिन बड़े संत, कवियों, निर्गुणियों और विचारकों ने समृद्ध बनाया है, उनके स्मरण में आज का कालम समर्पित है। राजपाल एंड संज की महत्वपूर्ण योजना 'कालजयी कवि और उनका काव्य' से दो प्रमुख संत/निर्गुण कवियों कबीर और रैदास के चयन को उदाहरणस्वरूप यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। इस शृंखला के संपादक भक्तिकाल के विद्वान माधव हाड़ा हैं। गौरतलब है कि इस सीरीज के अन्य कवियों में अमीर खुसरो, मीरां बाई, सूरदास और तुलसीदास पर चयन प्रकाशित हो चुके हैं। ऐसे चयन इस बात की आश्वस्ति देते हैं कि हम प्राचीन और आधुनिक के सहमेल से ऐसा कोई नया विचार रेखांकित कर सकें, जो काल की सीमा लांघकर आज के संदर्भों में भी समीचीन बना हुआ है। ऐसा करते हुए हम सिर्फ अपनी परंपरा से ही नहीं जुड़ते, बल्कि आने वाले समय में एक नई परंपरा की आधारशिला रच रहे होते हैं, जो अपने अतीत से जुड़कर एक वृहत्तर आयाम स्थापित करती है। भक्तिकाल में हम विभिन्न स्तरों पर अनेक संतों, विचारकों की वाणियों को समाज निर्माण के लिए संघर्षरत देखते हैं, जहां आडंबर का अस्वीकार और नैतिक प्रश्नों के लिए चेतावनी का स्वर प्रमुखता से उभरता है। यह देखना सुखद है कि माधव हाड़ा के पूर्व भक्तिकाल पर प्रामाणिक ढंग से टीकाएं होती रही हैं, जिन्हें हम एक जरूरी दस्तावेज की तरह पढ़ते हैं। इनमें प्रमुख रूप से आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, अली सरदार जाफरी, वियोगी हरि, मैनेजर पांडे का काम उल्लेखनीय माना जाता है।

कबीर वाला चयन उनके रचनाकर्म के साखी, सबद, रमैणी से एक संक्षिप्त चयन पर आधारित है। इनमें ध्यान देने वाली बात यह है कि कबीर की विपुल साखियों से कुछ का चयन करना दुरूह काम रहा होगा, जिसमें हर प्रकार की चेतावनी, नैतिकता के प्रश्न, युगबोध की बातें और कुरीतियों पर प्रहार के जितने भी रंग हो सकते हैं, वे सब सार्थक ढंग से समेटे गए हैं। इनमें- गुरुदेव कौ अंग समेत अन्य अंगों में 'विनती', 'निंदा', 'काल', 'सूरा तन', 'हेत प्रीत सनेह', 'साध महिमा', 'उपदेश', 'सारग्रही', 'कुसंगति', 'भेष', 'चांणक', 'माया', 'चितावणी' और 'ज्ञान-विरह' सभी कुछ समाहित है। विशेष प्रीति की बात यह है कि उन्हें उनकी मूल भाषा में रखने का जतन किया गया है। जैसे, यह साखी देखनी चाहिए- 'निंदक नेड़ा राखिए, आंगणि कुटी बंधाइ/बिन साबण पांणी बिना, निरमल करै सुभाइ।' यही बात सबद और रमैनियों के चयन में भी परिलक्षित है। छोटी सी मगर सारगर्भित भूमिका में माधव हाड़ा एक दक्ष विचारक की तरह कबीर के समय को नबेरते हैं। उनका धर्म, अध्यात्म, प्रखर विरोध का स्वर और जननायक की तरह उपदेश देने वाले की भूमिका पर विश्लेषण के साथ कबीर के समय और परिस्थितियों के साथ उस काल की विसंगतियों की चर्चा भी सधे ढंग से करते हुए वे एक ऐसा सुललित रीडर बनाते हैं, जिसे पढ़ते हुए यह जिज्ञासा उठती है कि उन्हें भक्तिकाल के तमाम अनाम कवियों पर भी ऐसे ही निबंध लिखने चाहिए। यह स्थापना देखिए- 'कबीर का अध्यात्म का अनुभव सीधे-सीधे कहीं से लिया हुआ नहीं है। यह केवल औपनिषदिक या सूफी या वैष्णव अध्यात्म नहीं है। दरअसल कबीर का यह अनुभव सत्संग और अभ्यास से अर्जित और उनका अपना है और खूब अच्छी तरह पकाया और पचाया हुआ है।' इस तरह सूक्ष्म और अलौकिक का विश्लेषण वे तार्किक ढंग से करते हुए कबीर को व्यावहारिकता की कसौटी पर कसते हैं।

रैदास की कविता का चयन अपने आप में मार्मिक और बेजोड़ है। एक ऐसा कवि जिसने अपनी जातीय अस्मिता से ऊपर उठकर, बिना किसी विभेद या द्वेष के संसार में प्रेम का मार्ग प्रशस्त किया। संपादक ने दर्ज किया है- 'वे अपनी आस्था-विश्वास और धारणा में कुछ हद तक अलग भी हैं। वे न तो कबीर की तरह आक्रामक और उग्र हैं और न ही सूर-तुलसी के समान पूरी तरह सगुण समर्थक हैं। सगुण और निर्गुण को वे एक मानते हैं, लेकिन उनकी वाणी का झुकाव सगुण की तरफ ज्यादा है।' इस तरह रैदास की एक जरूरी और सचेत भूमिका बनती है, जो आस्थावान कवियों और निर्गुण वैरागियों के मध्य समन्वय का पुल बना सकती है। वे अपनी उदारचेत्ता भावना में भक्ति की अनन्यता तक पहुंचते हैं। एक हद तक कहा जा सकता है कि रैदास, कबीर और तुलसी या नामदेव और सूरदास के किसी मिलन-बिंदु पर दीपशिखा की भांति प्रज्ज्वलित हैं। इनके पदों के अर्थबोध और दार्शनिकता को समझाने में चयनकर्ता ने वाणियों में आने वाले उन आध्यात्मिक शब्दों को भी परखा है, जिससे निर्गुण भक्ति कविता की एक शब्दावली तैयार होती है। शास्त्रीय संगीत में भी रैदास को गाने की एक बड़ी परंपरा रही है, जिनके कुछ पदों का यहां उल्लेख हुआ है, मसलन- 'गाइ-गाइ अब का कहि गाऊं, गावनहार को निकट बताउं'... यह दोनों संचयन अपनी मूल बानियों और वैचारिक भूमिका के कारण संग्रहणीय बन पड़े हैं। माधव हाड़ा की हिंदी के पाठकों और शोधार्थियों के लिए प्रामाणिक सामग्री मुहैया कराने में अहम भूमिका बनती है।

कालजयी कवि और उनका काव्य
कबीर/रैदास
संपादकः माधव हाड़ा
कविता/पदावली संचयन
पहला संस्करण, 2022
राजपाल एंड संज, नई दिल्ली
मूल्यः 185 रुपए (प्रत्येक)

आप भी कुछ कहना चाहते हैं...
kitabghar@nda.jagran.com